: शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के उद्देश्य :

- ''देश को बदलना है तो शिक्षा को बदलना होगा।'' इस संदर्भ में ''शिक्षा के नए विकल्प'' हेतु कार्य करना ।
- माँ, मातृभूमि एवं मातृभाषा का कोई विकल्प नहीं हो सकता।
- छात्रों का चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास हो ।
- शिक्षा मात्र सरकार का दायित्व नहीं है इसमें समाज की महत्वपूर्ण भूमिका हो।
- पाठ्यक्रमों को व्यावहारिक (प्रेक्टिकल) बनाया जाए।
- समस्या नहीं समाधान की बात करो ।
- शिक्षा का एकात्म स्वरूप एवं समग्रता की दृष्टि हो ।

15 जुलाई 2023

- स्वल्पाहार एवं स्पॉट रजिस्ट्रेशन – प्रात: 09.00 बजे से
- उद्घाटन सत्र, बीज उदबोधन – प्रात: 10.00 बजे से
  विषयविद उदबोधन एवं विमर्श निरंतर सत्र
- शोध पत्र वाचन समूहानुसार समानांतर सत्र – अपरान्ह 2.30 बजे से

16 जुलाई 2023

- सत्र प्रारम्भ प्रात: 10.30 बजे से
  (शोध पत्र प्रस्तुति करण, शिक्षा विदों का विमर्श ।)
- प्रतिवेदन एवं समापन सत्र – सायं 3.30 बजे से ।

(सत्रों के मध्य 01.30 घण्टे भोजन अवकाश तथा 10-10 मिनिट चाय अवकाश)

: संगोष्ठी हेतु नियम :

प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपने शोध पत्र का सारांश अधिकतम 300 शब्दों में एवं पूर्ण पत्र लगभग 1000 से 2500 शब्दों में अंकित कर प्रेषित करें। शोध पत्र अंग्रेजी में रोमन लिपि तथा हिन्दी में कृति देव-10 फॉन्ट में उपलब्ध करायें। सारांश में शोध पत्र का शीर्षक भी होना चाहिये।

प्रतिभागी अपना नाम, मोबाइल नम्बर, पूर्ण पता, पद और ईमेल एड्रेस भी अंकित करें।

संगोष्ठी के समय शोध पत्र एक हार्ड कॉपी भी साथ में लायें।

पूर्ण शोध पत्र हमारे ईमेल

rajendrakvaidya@gmail.com

dsbhadauria1963@gmail.com पर प्रेषित करें ।

आयोजन समिति

डॉ. डी. एन. गोस्वामी
रेक्टर, जी.वि.वि., ग्वा.

डॉ. आर. के. बघेल
कुल सचिव,जी.वि.वि., ग्वा.

डॉ. शांति देव सिसोदिया
प्रभारी, परीक्षा नियंत्रक

डॉ. जे. एन. गौतम
प्राध्यापक, जी.वि.वि., ग्वा.

डॉ. सुशील मण्डेरिया
प्राध्यापक, जी.वि.वि., ग्वा.

डॉ. एस. एन. महापात्रा
उपनिदेशक,दू.शि.,जी.वि.वि.,ग्वा.

डॉ. शिवओम सिंह राठौर
प्राध्यापक,आई टी एम वि.वि.,ग्वा.

डॉ. नीरज कुमार झा
प्राध्यापक, एम.एल.बी.कॉलेज,ग्वा.

श्री अनिल माथुर
आई.टी.एम. वि.वि., ग्वा.

डॉ. श्याम पाठक
शिक्षाविद्, ग्वा.

श्री धीरेन्द्र सिंह भदौरिया
सह-संयोजक, मध्य प्रांत, न्यास

श्री राजकुमार वाजपेई
संयोजक, ग्वालियर विभाग, न्यास

डॉ. बी. पी. एस. जादौन
प्राध्यापक

डॉ. महिपाल सिंह
संयोजक, भाषा मंच, ग्वालियर

डॉ. रविकांत अदालतवाले
संयोजक, रा.से.यो., जी.वि.वि., ग्वा

डॉ. राकेश कुशवाह
कुलसचिव, रा.मा.सं.क.वि.वि., ग्वा.

डॉ. कल्पना कुशवाह
प्रांत संयोजक, शोध प्रकल्प

डॉ. मंजू शर्मा
व्याख्याता, शा.शि.महाविद्यालय, ग्वा.

डॉ. शैलेन्द्र मोहिते
प्रधान संपादक, शोधायन जर्नल

डॉ. मनीष खेमरिया
प्राध्यापक, एमएलबी कॉलेज, ग्वालियर

सलाहकार मण्डल

डॉ. अशोक कड़ेल
निदेशक, हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल

डॉ. के. रत्नम
अति. संचालक, उच्च शिक्षा, ग्वालियर-चंबल संभाग

डॉ. राकेश ढांड
प्रान्त संयोजक, मध्यभारत, शिक्षा उत्थान न्यास

डॉ. के. एस. राठौर
प्राचार्य, शास. महारानी लक्ष्मीबाई कला एवं वाणि. महाविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. ओमवीर सिंह
कुल सचिव, आई.टी.एम. विश्वविद्यालय, ग्वालियर

ITM UNIVERSITY
GWALIOR • MP • INDIA

राष्ट्रीय संगोष्ठी
National Seminar

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शैक्षणिक स्वायत्तता : प्रावधान एवं संभावनाएँ

Educational Autonomy under National Education Policy 2020 : Provision & Prospects

दिनांक : 15-16 जुलाई 2023 (शनिवार एवं रविवार)
स्थान : गालव सभागार, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

-: संरक्षक :-

प्रो. अविनाश तिवारी
कुलपति
जीवाजी विश्व विद्यालय ग्वालियर

प्रो. दौलत सिंह चौहान
सम-कुलाधिपति, आई टी एम विश्वविद्यालय
ग्वालियर

डॉ. दुर्गा प्रसाद अग्रवाल
राष्ट्रीय संयोजक, शिक्षा में स्वायत्तता
शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

-: आयोजक मण्डल :-

: संयोजक :
डॉ. राजेन्द्र वैद्य
(प्राध्यापक)
मध्यक्षेत्र संयोजक
शिक्षा में स्वायत्तता
मोबा. 8319590956
rajendrakvaidya@gmail.com

: आयोजन सचिव :
डॉ. हेमंत शर्मा
निदेशक
दूरस्थ शिक्षण संस्थान
जीवाजी विश्व विद्यालय ग्वा.
मोबा. 9131439732
shrhemant@yahoo.com

: सह संयोजक :
डॉ. अशोक चौहान
प्रांत संयोजक
शिक्षा में स्वायत्तता
मध्यभारत प्रान्त
मोबा. 9425115621
ashokchauhangwl@gmail.com

आयोजक

- दूरस्थ शिक्षण संस्थान, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर
- शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली, मध्य भारत प्रांत
- आईटीएम विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

शिक्षा में स्वायत्तता.... एक विचार

वस्तुतः शिक्षा में स्वायत्तता से तात्पर्य अधिक विकेंद्रित संस्थागत जिम्मेदारी जिसमें विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षक, प्रबंधन एवं प्रशासन के साथ समाज के प्रत्येक वर्ग को लगे कि वह प्रत्येक निर्णय में किसी न किसी रूप से भागीदार है या उसका योगदान है। जिस प्रकार भारत की पारंपरिक शिक्षा व्यवस्था पूर्ण स्वस्थ होकर किसी बाह्य नियंत्रण या दवाब से मुक्त होकर महान ज्ञानियों, अनुसंधानकर्ताओं, ऋषियों एवं मानवीय मूल्यों से युक्त चरित्रवान, स्वावलंबी समाज का निर्माण करती थी वही ज्ञान परंपरा आज भारत को समृद्धशाली बनाने एवं विश्व गुरु का दर्जा दिलाने के लिए आवश्यक है। इसके लिए पूर्वानुसार शिक्षा में स्वायत्तता होना अपरिहार्य है। निश्चित रूप से स्वायत्त शिक्षण संस्थान अपनी सर्वांगीण गुणवत्ता बढ़ाने के लिए अधिक सक्षम होता है। नवाचार, नए पाठ्यक्रम स्थानीय परिस्थितियों एवं आवश्यकता के अनुसार रोजगार मूलक शिक्षा उसके लिए आवश्यक परिवर्तन एवं सुधार की गुंजाइश शिक्षकों एवं अन्य कर्मियों में उत्तरदायित्व का बोध बढ़ाना, पाठ्यक्रमों में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन कराना, संस्था का प्रबंधन, प्रशासन में भी नवाचार जैसे अनेक सुधार और परिवर्तन स्वायत्तशासी संस्थाओं में ही संभव हो सकते हैं। इन्हीं सब विषयों पर केन्द्रित होते हुए इस संगोष्ठी का आयोजन किया गया है। विश्वास है कि शिक्षा के क्षेत्र में और नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति को कार्यान्वित करने की दिशा में यह संगोष्ठी महत्वपूर्ण साबित होगी।

संगोष्ठी के उपविषय –

1. प्राचीन भारत एवं पूर्व औपनिवेशिक कालीन शैक्षणिक व्यवस्था।
2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में गुणवत्ता पूर्ण दूरस्थ शिक्षा।
3. औपनिवेशिक काल में शैक्षणिक व्यवस्था।
4. शैक्षणिक व्यवस्था में प्रशासनिक एवं प्रबंधन स्वायत्तता।
5. शैक्षणिक संस्थानों में स्वायत्तता।
6. भारतीय ज्ञान परम्परा में शैक्षणिक स्वायत्तता की प्रासंगिता।
7. भारतीय शिक्षा में स्वायत्तता के लिए समकालीन बाधाएँ।
8. भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में स्वायत्तता का प्रावधान।
9. राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 में विद्यार्थी, अभिभावक एवं समाज की भूमिका।
10. बहुविषय शिक्षा शैक्षणिक स्वायत्तता में सहायक।
11. शैक्षणिक स्वायत्तता की परिप्रेक्ष्य में गुरुकुल पद्धति।
12. प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता।
13. दूरस्थ शिक्षा पद्धति और स्वायत्तता।
14. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और प्रशासनिक स्वायत्तता।
15. बहुविषय शिक्षा व्यवस्था में एक्जिट/एंट्री व्यवस्था।
16. शिक्षा के विभिन्न आयाम, संकाय एवं विषय की शैक्षणिक स्वायत्तता।
17. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के संदर्भ में स्वायत्तता।
18. अन्य प्रासंगिक उप–विषय।

ग्वालियर – ऐतिहासिक विहांगावलोकन

ऋषि गालव की तपोभूमि, संगीत सम्राट तानसेन की जन्म स्थली, राजामानसिंह तोमर की सिंहासित भूमि तथा 1857 की क्रांति वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई के रक्त से सिंचित यह भूमि – ग्वालियर ऐतिहासिक एवं सास्कृतिक दृष्टि से भी महत्व पूर्ण है। भौगोलिक दृष्टि से यह म. प्र. राज्य के उत्तर में स्थित है, ग्वालियर के आस–पास औद्योगिक क्षेत्र भी स्थित है। यहां के प्रमुख पर्यटन स्थल, ग्वालियर दुर्ग, तेली का मंदिर, मानमंदिर महल, जयविलास महल और संग्रहालय, तानसेन की समाधि, मोहम्मद गोश का मकबरा, विवस्वान सूर्य मंदिर, गोपाचल पर्वत तथा वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई शहीद स्मारक हैं। जुलाई में यहाँ औसत वर्षा के साथ तापमान 30 से 40 डिग्री सेल्सियस रहता है। ग्वालियर का राजमाता विजयाराजे सिंधिया विमानतल, शहर को दिल्ली, मुंबई, इन्दौर, भोपाल व जबलपुर से जोड़ता है। ग्वालियर का रेलवे स्थानक देश के विविध रेलवे स्थानकों से जुड़ा हुआ है। यह उत्तर मध्य रेल्वे का प्रमुख स्टेशन है।

दूरस्थ शिक्षण संस्थान, जीवाजी विश्व विद्यालय, ग्वालियर

जीवाजी विश्वविद्यालय, सिटी सेन्टर, ग्वालियर की स्थापना वर्ष 1964 में ग्वालियर एवं चम्बल के विद्यार्थियो हेतु संपूर्ण शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से की गयी। यह संस्थान कला, वाणिज्य, शिक्षा एवं अन्य व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को उपलब्ध कराने में सक्षम है। इस वर्ष विश्वविद्यालय को नेक के मूल्यांकन में "A++" का ग्रेड प्राप्त हुआ है। विश्वविद्यालय में दूरस्थ शिक्षण संस्थान की स्थापना वर्ष 1995 में हुई है, जो शिक्षा के प्रसार में निरंतर रत् हैं।

आई टी एम विश्वविद्यालय, ग्वालियर

ग्वालियर में झाँसी रोड स्थित विशाल परिसर में सन् 2011 से स्थापित यह विश्वविद्यालय शासन एवं विषय विशेष मानक संस्थाओं से संबद्ध प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय है। जहाँ विभिन्न व्यावसायिक एवं पारम्परिक पाठ्यक्रमों के अंतर्गत प्रबंधन, इंजीनियरिंग, नर्सिंग, फार्मेसी, विज्ञान सहित तेरह संकायों के पाठ्यक्रमों को उपलब्ध करा रहा है।

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की शुरूआत 02 जुलाई 2004 में 'शिक्षा बचाओ आन्दोलन' के रूप में हुई थी। इस आन्दोलन का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में विकृतियों को हटाने और इसके स्वरूप के विरूपण को दूर करने का था। भारत की शिक्षा को संस्कारित करने की प्रक्रिया को निरन्तर रखने के उद्देश्य से इस आन्दोलन को 'शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास' के रूप में दिनांक 24 मई 2007 को संस्थागत किया गया। न्यास का ध्येय वाक्य ही है: ''देश को बदलना है तो शिक्षा को बदलो।''

पंजीयन फॉर्म

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत
शैक्षणिक स्वायत्तता : प्रावधान एवं संभावनाएँ

दिनांक : 15–16 जुलाई 2023 (शनिवार एवं रविवार)

नाम (कुमारी/श्री/डॉ./प्रो.).....

पद.....

विभाग.....

संगठन/संस्थान.....

विषय .....

दूरभाष:.....ईमेल: .....

आलेख/शोधपत्र शीर्षक.....

.....

पंजीयन शुल्क – रु. 500/–

कृपया पंजीयन फॉर्म के साथ शुल्क जमा पर्ची संलग्न करें।

प्रतिभागियों को मार्ग व्यय एवं आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

प्रतिभागी शोधपत्र निम्न ई–मेल आई–डी में से किसी एक पर भेजें –
ईमेल – rajendrakvaidya@gmail.com
dsbhadauria1963@gmail.com

प्रतिभागी के हस्ताक्षर

पंजीयन फॉर्म

राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अन्तर्गत शैक्षणिक स्वायत्तता : प्रावधान एवं संभावनाएँ

दिनांक : 15-16 जुलाई 2023 (शनिवार एवं रविवार)

नाम (कुमारी/श्री/डॉ./प्रो.): .....

पदः .....

विभागः .....

संगठन / संस्थानः .....

विषयः.....

दूरभाषः.....ईमेलः.....

आलेख / शोधपत्र शीर्षक: .....

.....

.....

पंजीयन शुल्क - रू. 500/-

प्रतिभागियों को मार्ग व्यय एवं आवास की व्यवस्था स्वयं करनी होगी।

.....

प्रतिभागी के हस्ताक्षर

प्रतिभागी शोधपत्र निम्न ई-मेल आई डी में से किसी एक पर भेजें

ईमेलः rajendrakvaidya@gmail.com dsbhadauria1963@gmail.com